National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 1; Issue 3; July 2016; Page No. 04-05

ज्ञान, वैराग्य और मोक्ष का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध

डॉ0 राजकुमार

शोध–छात्र (डी0लिट0) संस्कृत विभाग, बी0एस0ए0 कॉलेज, मथुरा

सार
जीवात्मा सृष्टि के आरम्भ काल से ही ज्ञान के अभाव में जन्म, जरा औरा मृत्यु के भय से दुःखों से ग्रसित होकर चौरासी लाख यौनियों में भटकता चला आ रहा है। इस जन्म, जरा और मरण तथा अवागमन के चक्र से सदा–सदा के लिय छुटकारा पाने का नाम ही मोक्ष है। यह केवल तत्त्व ज्ञान से ही संभव है। सृष्टि के वास्तविक सत्य ब्रह्म और उसकी शक्ति माया अथवा प्रकृति को जानना ही ज्ञान है। इसकी प्राप्ति के लिये वैराग्य का होना परम आवश्यक है। मनुष्य के अन्दर सांसारिक विषय वासनाओं व इच्छाओं का अभाव (विरक्ति) ही वैराग्य है। अतः हम निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि ज्ञान,वैराग्य ओर मोक्ष ये तीनों ही एक–दूसरे के पूरक हैं। इस शोध पत्र से विज्ञजनों को ज्ञान, वैराग्य और मोक्ष व उनके अन्योन्याश्रित सम्बन्ध विषयक ज्ञान प्राप्त होगा।

प्रस्तावना
जीवात्मा सृष्टि के आरम्भकाल से ही ज्ञान के अभाव में जन्म, जरा औरा मृत्यु के भय से दुःखों से ग्रसित होकर चौरासी लाख यौनियों में भटकता चला आ रहा है। इस जन्म, जरा और मरण तथा अवागमन के चक्र से सदा–सदा के लिय छुटकारा पाने के लिये भारतीय मनीषियों ने सदां से प्रयास करते हुए आत्म–चिन्तन किया है। आध्यात्मिक ज्ञान इसी के चिन्तन का प्रतिफल है। आत्म–चिन्तन के दौरान इन्होंने जन्म–मरण के चक्र से छुटकारा पाने के लिये जो मार्ग दिया वह दर्शन कहलाया। ज्ञान शब्द ज्ञ धातु में ल्युट् प्रत्यय के योग से निष्पन्न होता है; जिसका अर्थ है जानना। संसार में सृष्टि प्रक्रिया प्रकृति और पुरुष के संयोग से होती है–'क्षेत्र क्षेत्रज्ञयोर्ज्ञानं यत्तज्ज्ञानं मतं मम'[1] महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनुसार सृष्टि के वास्तविक सत्य को जानना ही ज्ञान है–यथार्थ् दर्शनं 'ज्ञानमिति' [2] जगत् गुरू शंकराचार्य जी के अनुसार सोऽयं नित्यानित्यवस्तुविवेकः समुदाहृतः'[3] अर्थात् सृष्टि में क्या नित्य है, क्या अनित्य है, क्या सत्य है और क्या मिथ्या है इसका भेद करना ही ज्ञान है । इसी के आधार पर जगत् गुरू शंकराचार्य जी ने अद्वैत के प्रमुख सिद्धांत ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या का प्रतिपादन किया अर्थात् सृष्टि में ब्रह्म ही सत्य है औंर यह जगत् मिथ्या है। 'ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना'[4] अर्थात् ज्ञान के अन्तर्गत ज्ञान, ज्ञेय और ज्ञाता ये तीन तथ्य आते हैं। जो जाना जाता है उसे ज्ञान कहते हैं, जिसे जाना जाता है उसे ज्ञेय कहते हैं और जो जान लेता हे वह ज्ञाता कहलाता है।
विरागस्य भावः इति वैराग्यं अर्थात् मनुष्य के अन्दर सांसारिक विषय वासनाओं व इच्छाओं का अभाव (विरक्ति) ही वैराग्य है। विगतः रागः विरागः अर्थात् पुरुष के अन्दर से राग के निकल जाने को विराग कहते हैं। सांसारिक वस्तुओं (यथा– धन, सम्पत्ति ,स्त्री, पुत्रादि) के प्रति मोहरूपी दलदल को पार करने से वैराग्य की प्राप्ति हो जाती है–

यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च।।[5]

वैराग्य का अर्थ संसार को छोड़ना अथवा उससे भागना नहीं है; अपितु उसके प्रति आसक्ति का त्याग (निरासक्त भाव) है, ऐसा ही संत कबीरदास जी ने कहा है–मन न रंगाये रंगाये योगी कपरा। संसार और आत्मा दो छोर हैं। बाहर है संसार और भीतर है आत्मा अर्थात् परमात्मा, दोनों मार्ग भिन्न–भिन्न दिशाओं में जा रहे हैं, मनुष्य दोनों के मध्य में खड़ा है। यदि वह संसार की तरफ भागता है तो परमात्मा से दूर हो जाता है और यदि वह परमात्मा की ओर जाना चाहता है तो उसे संसार से विमुख (विरक्त) होना पड़ेगा। अतः संसार से विरक्ति ही वैराग्य है ।समस्त प्रकार की इन्द्रियों के विषयों के प्रति निरासक्त भाव ही वैराग्य है।
दृष्टानुश्रविक विषयवितृष्णस्य वशीकार संज्ञा वैराग्यम्।[6]– अर्थात्– दृष्ट और आनुश्रविक नामक दोनों प्रकार के विषय भोगों से जब साधक का चित्त भली भाँति तृष्णा रहित हो जाता है अथवा उन विषय भोगों को प्राप्त करने की इच्छा का सर्वथा विनाश हो जाता है; ऐसे कामनारहित चित्त की जो वशीकार नामक अवस्था विशेष होती है वह वैराग्य कहलाती है।
मोक्ष शब्द 'मुक्ति' का ही पर्याय है। 'मुक्ति' शब्द की निष्पत्ति मुच् धातु में क्तिन् प्रत्यय के योग से होती है, जिसका अर्थ है– छुटकारा, निस्तार, आवागमन के चक्र से आत्मा का मोचन, मुंचन्ति पृथग्भवन्ति जना यस्यां सा मुक्तिः[7] अर्थात् जिसमें छूट जाना हो उसी का नाम मुक्ति है। 'भूयो जन्माद्यप्रसक्तिर्विमुक्तिः।[8] अर्थात् पुनः कभी जन्मादि का प्रसंग न हो वह मुक्ति है। श्रीमद्भगवद्गीता में जीवात्मा के आवागमन (पुनर्जन्म) के नाश को मोक्ष कहा गया है–

मामुपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयमशाश्वतम्।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः।।[9]

कठोपनिषद् में ज्ञानेन्द्रियों तथा मन के आत्मा में लय (स्थित) हो जाने को मोक्ष कहा गया है–

यदा पञ्चावतिष्ठन्ते ज्ञानानि मनसा सह।
बुद्धिष्वनविचेष्टतितामाहुःपरमांगतिम्।।[10]

यह मुक्ति कोई स्थान विशेष नहीं, न इसको प्राप्त करने के लिए कोई वैतरणी (नदी) ही पार करनी पड़ती है, बल्कि अपनी वास्तविक स्थिति को जान लेना है जो केवल प्रत्यक्ष दर्शन से ही संभव है। इसी से समस्त ग्रन्थियाँ खुल जाती हैं। कारण कार्यरूप ब्रह्म का साक्षात्कार कर लेने पर जीव की हृदय ग्रन्थि (बुद्धि में स्थित अविद्या वासनामय काम) टूट जाती है, सारे संशय नष्ट हो जाते है और वह मुक्त हो जाता है।[11] शिवगीता में भी ऐसा ही कहा गया है– मोक्ष कोई लोक नहीं है जहाँ जीव निवास करता हो, बल्कि हृदय की अज्ञान ग्रन्थि का नष्ट हो जाना ही मोक्ष है, जिससे उसको फिर इस लोक में नहीं आना पड़ता।

मोक्षस्य न हि वासोऽस्ति न ग्राम्यन्तरमेव वा।

अज्ञान हृदय ग्रन्थि नाशो मोक्ष इति उच्यते।।[12]

श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मा के परमात्मा से मिलन (परमात्म में विलय) को मोक्ष बताया गया है–मामुपेत्यतु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते'।[13] जिस क्षण यह पुरुष (जीवात्मा) भूतों के पृथक–पृथक भाव को एक परमात्मा में ही स्थित तथा उस परमात्मा से ही सम्पूर्ण भूतों का विस्तार देखता है, उसी क्षण वह सच्चिदानन्दघन ब्रह्म को प्राप्त हो जाता है।[14]। श्रीमद्भगवद्गीता में मोक्ष को परमसिद्धि परमशान्ति, परमगति तथा परमधाम के नाम से इंगित किया गया है–

न तद्भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम।।[15]

जिस परमपद को प्राप्त करके जीवात्मा लौटकर संसार में नहीं आते उस स्वयं प्रकाश परमपद को न सूर्य प्रकाशित कर सकता है, न चन्द्रमा और न अग्नि ही, वही मेरा परमधाम है। प्रायः अधिकांशतः समस्त आस्तिक दर्शनों में ज्ञान, वैराग्य और मोक्ष के अन्योन्याश्रित सम्बन्ध को दर्शाया गया है कि वैराग्य के बिना ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती और ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं प्राप्त होती। इसी सम्बन्ध को दर्शाते हुये श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है–

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।[16]

अर्थात् जितेन्द्रिय, साधन परायण और श्रद्धावान मनुष्य ज्ञान प्राप्त कर लेता है। मनुष्य का जितेन्द्रिय, साधन परायण और श्रद्धावान होना वैराग्य का लक्षण है। ज्ञान प्राप्त करके मनुष्य (जीवात्मा) बिना विलम्ब के ही तत्काल भगवत्प्राप्ति रूप परमशान्ति (मुक्ति) को प्राप्त कर लेता है। अतः इस श्लोक के माध्यम् से ज्ञान, वैराग्य और मोक्ष में अन्योन्याश्रय सम्बन्ध को स्थापित किया गया है। उपनिषदों में कहा गया है ऋतेज्ञानान्मुक्तिः अर्थात् ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं है। इसी प्रकार आर्हतदर्शन में जैन धर्मावलम्बियों ने ज्ञान और मोक्ष का सम्बन्ध स्थापित किया है–

मिथ्यादर्शनादीनां बन्धहेतुनां निरोधेऽमिनवकर्माभावान्निर्जरा हेतुतुर्सान्नेधानेनार्जितस्य निरसनादात्यान्तिककर्म मोक्षणांमोक्षः।[17]

अर्थात् मिथ्यादर्शन आदि बन्ध के कारण है उनका निरोध (संवर) कर लेने पर नये कर्मों का विनाश हो जाता है, तब सब प्रकार के कर्मो से सदा सदा के लिये मुक्ति मिल जाती है। यही मोक्ष है। यहाँ पर संवर और निर्जरा ही ज्ञान है क्योंकि ज्ञान ही समस्त प्रकार के कर्मो को भस्म कर देता है।

यथैधांसि समिद्धोऽग्निर्भस्मसात्कुरुते अर्जुन।
ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात्कुरूते तथा।।[18]

जैसे प्रज्वलित अग्नि सूखे एवं गीले ईधनों को भस्ममय कर देता है वैसे ही ज्ञान सम्पूर्ण कर्मो को भस्म मय कर देता है।
विवेक चूडामणि में इस सम्बन्ध के विषय में कहा गया है–

वैराग्यस्य फलं बोधो बोधस्योपरतिः फलम्।
स्वानन्दानुभवाच्छान्तिरेषवोपरतेः फलम्।।[19]

अर्थात्– वैराग्य से बोध प्राप्त होता है और प्राप्त बोध से उपरति विषयों से उदासीनता। प्राप्त होती है तथा उपरति से चित्त शान्त होता है, शान्त चित्त ही मुक्ति है।
इसी बात को अष्टावक्र गीता में कहा गया है–

तदामुक्तिर्यदा चित्तं न वाञ्छति न सोचति।
न मुञ्चतिग्रहणाति न हृष्यति न कुप्यति।।[20]

अर्थात्– चित्त की आत्यन्तिक रूप से शान्त अवस्था ही मोक्ष है।

यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते का भायेऽस्य वशंगता।
अमर्त्योऽमृतो भवेत्यतावनुशसनम्।।[21]

अर्थात्– जिस समय जीवात्मा के हृदय की सम्पूर्ण वासना नष्ट हो जाती है तब उसे वैराग्य प्राप्त हो जाता है और ज्ञान प्राप्त करके मुक्ति प्राप्त करके मुक्ति प्राप्त कर लेता है।
अष्टावक्र गीतामें भी मुक्ति प्राप्ति हेतु ज्ञान, वैराग्य का होना आवश्यक बताया गया है–

मुक्तिमिच्छसि चैत्तात विषयान विषवत्यज्।
क्षमार्ज्जवदयातोषं सत्यं पियूषवद् भज।।[22]

यदि व्यक्ति मुक्ति चाहता है तो उसे विषयों को विष के समान छोड़ देना चाहिये तथा क्षमा, सरलता दया सन्तोष और सत्य का अमृत के समान सेवन करना चाहिये। इन्द्रिय जनित विषयों को विष के समान छोड़ना तथा क्षमा, सरलता, दया, सन्तोष और सत्य का सेवन ये वैराग्य के लक्षण है। अतः इन्द्रिय विषयों के प्रति आसक्ति का त्याग ही वैराग्य है जो कि ज्ञान प्राप्ति के लिये आवष्यक है। वैराग्य प्राप्त होते ही व्यक्ति जब अपनी देह से सम्बन्ध (स्वयं को शरीर से अलग कर) छोड़ देता है और आत्म साक्षात्कार कर लेता है तब वह मुक्ति प्राप्त कर लेता है।

निष्कर्षतः उपरोक्त ज्ञान वैराग्य और मोक्ष का अन्योन्याश्रित सम्बन्ध के सन्दर्भ में दिये गये तथ्यों का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि ज्ञान, वैराग्य और मोक्ष एक दूसरे के पूरक है यथा वैराग्य के बिना ज्ञान नहीं हो सकता, ज्ञान के बिना वैराग्य नहीं हो सकता तथा बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं मिल सकती।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्रीमद्भगवद्गीता,13/2
2. सत्यार्थ प्रकाश सप्तम् समुल्लास पृ.सं.156
3. विवेकचूड़ामणि,1/21
4. श्रीमद्भगवद्गीता,18/18
5. श्रीमद्भगवद्गीता,2/52
6. पातंजलयोगदर्शन
7. सत्यार्थ प्रकाश /नवम् समुल्लास पृ.सं.195
8. सर्ववेदांत सिद्धांत सार संग्रह,848
9. श्रीमद्भगवद्गीता,8/15
10. कठोपनिषद्,2/3/10
11. मुण्डकोपनिषद्, 2/2/18
12. श्री शिवगीता,13/32
13. श्रीमद्भगवद्गीता,8/16
14. श्रीमद्भगवद्गीता,14/30
15. श्रीमद्भगवद्गीता15/6
16. श्रीमद्भगवद्गीता,4/39
17. सर्वदर्शन संग्रह(आर्हत दर्शनम्ः मोक्ष विचार)पृ.सं.144
18. श्रीमद्भगवद्गीता,4/37
19. विवेक चूड़ामणि
20. अष्टावक्र गीता,8/2
21. श्री शिव गीता,13/31
22. अष्टावक्र गीता,1/2